प्रस्तावना

दुनिया में अब तक आई सबसे विनाशकारी महामारियों में से एक के खिलाफ हमारे निरंतर संघर्ष के साथ ही जो एक प्रमुख चिंता उभरने लगी है वो है बायोमेडिकल कचरे की बढ़ती मात्रा। इस्तेमाल किए गए पीपीई किट, फेस मास्क और दस्ताने, वैक्सीन की शीशियां, सीरिंज, और सुई आदि जो कोविड-19 के खिलाफ हमारी लड़ाई का हिस्सा रहे, अब बायोमेडिकल कचरे के ढ़ेर में तब्दील हो गए हैं। देशभर में कोविड की दूसरी लहर के दौरान 2021 के अप्रैल-मई महीने में कोविड-19 से संबंधित बायोमेडिकल कचरे के उत्पादन में 46 प्रतिशत की भारी बढ़ोतरी देखी गई।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, महामारी की पहली लहर के बाद से भारत में किसी भी दिन उत्पन्न होने वाले बायोमेडिकल कचरे के लगभग 20 प्रतिशत हिस्से का संबंध कोविड-19 से है। डराने वाली बात यह है कि इनमें से अधिकांश संख्याएं और आंकड़े कम करके आंके गए हो सकते है।

जो सवाल हमें ज़रूर उठाने चाहिए वो ये हैं कि इस कचरे का निपटान कैसे हो रहा है? क्या इसे ठीक से अलग-अलग किया जा रहा है और सुरक्षित तरीके से नष्ट किया जा रहा है? या क्या इसे वैसे ही फेंका जा रहा है जैसे हम आम तौर पर अपना सारा कचरा एकसाथ मिला कर अपने घर के कूड़ेदानों में डालते हैं, जहां से यह पड़ोस के डंपयार्ड या लैंडफिल में जाता है? क्योंकि अगर हमने अपने कोविड-संबंधित कचरे का निपटान करने का ये तरीका अपनाया हुआ हैं तो हम संक्रमण के एक संभावित टाइम-बम पर हम बैठे हुए हैं।

आज की दुनिया जिस तरह बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं और उपभोग से प्रेरित है, वैसा पहले कभी नहीं देखा गया। जैसे-जैसे हम अधिक उपभोग करते जाते हैं, हम ज्यादा मात्र में कचरा पैदा करने लगते हैं - खास तौर पर ठोस कचरा। हमारे गांव और शहर, ज़मीनें, जल निकाय, और यहां तक कि महासागर भी टनों ठोस कचरे से भरे हुए हैं, और हमारी पृथ्वी इस के बोझ तले दबी जा रही। हमारे स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव गंभीर हो सकते हैं, क्योंकि इस कचरे में भारी मात्रा में जहरीले पदार्थ, खतरनाक तत्व, और कोविड-19 से संबंधित बायोमेडिकल अपशिष्ट, जिनकी ऊपर चर्चा की गई है, शामिल हैं जो पर्यावरण के माध्यम से आसानी से हमारे शरीर और खाद्य श्रृंखलाओं में प्रवेश कर सकते हैं।

इधर कई वर्षों से सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) ठोस कचरे और इसके प्रबंधन के सवाल को सार्वजनिक पटल पर लाने की कोशिश कर रहा है। अपने प्रकाशनों और रिपोर्ट के माध्यम से सीएसई ने इस बात रेखांकित किया है कि काफी रिसर्च होने के बावजूद देश में जमा होने वाले कचरे की वास्तविक मात्रा, गुणवत्ता, या बदलती संरचना के बारे में बहुत कम

जानकारी है। यह शहरी क्षेत्र में उत्पन्न ठोस कचरे के प्रबंधन को आवश्यक रूप से अत्याधुनिक बनाने के लिए सरकारों और स्थानीय प्रशासनों के साथ काम कर रहा है, और इसने अन्य उपायों के साथ साथ अलग-अलग करने, रीसाइकल करने, और दोबारा उपयोग पर जोर देकर कचरे के स्थायी स्कूल्स की लगातार वकालत की है।

ठोस कचरे की समस्या से निपटने के लिए सीएसई की ग्रीन स्कूल्स प्रोग्राम (जीएसपी) टीम भी कदम से कदम मिलाकर चल रही है। ठोस कचरे पर समर्पित इसके एक वर्टिकल ने समस्या को समझने और समाधान खोजने के लिए स्कूलों, शिक्षकों, और छात्रों के साथ काम करना शुरू कर दिया है। इस वर्टिकल के तहत जीएसपी टीम ने दो बेहतरीन कदम उठाए हैं - कचरे पर विशेष ऑडिट कार्यक्रम और कचरे को अलग-अलग करने वाले स्कूलों के फोरम का निर्माण।

महामारी से प्रेरित 'न्यू नॉर्मल' की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, ऑडिट कार्यक्रम को एक ऐसी पहल के रूप में फिर से तैयार किया गया है, जिसमें छात्र और शिक्षक अपने घरों से भाग ले सकते हैं, जहां 2020-21 के दौरान अधिकांश समय वो बंद रहे हैं। जहां तक फोरम की बात है, यह देशभर के स्कूलों के एक जीवंत समूह के रूप में उभरा है, जो स्कूल परिसर के साथ-साथ घरों के आसपास भी ठोस कचरे के प्रबंधन के लिए हरसंभव कदम उठाने के लिए पूरी सक्रियता से काम करने में जुटा है। इन दोनों पहलों में जीएसपी टीम तत्परता से स्कूलों, शिक्षकों, और छात्रों तक जानकारी, कौशल, और संसाधन पहुंचाने में मदद कर रही है।

जीएसपी टीम के शिक्षण संसाधनों की सूची में यह पुस्तिका सबसे नई है, जिसे खासतौर पर स्कूलों और उनके शिक्षकों के लिए तैयार किया गया है। हमें इस तरह की पुस्तिका की जरूरत का एहसास तब हुआ, जब हमने 'कचरे का पृथक्करण करने वाले स्कूलों के फोरम' के सदस्यों के साथ अपनी पहली बातचीत का आयोजन किया। फोरम के सदस्यों ने ठोस कचरे के प्रबंधन के विषय पर बेहद तीखे सवाल और टिप्पणियां कीं, जिसने हमें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या हम इस विषय पर कोई विशेष किताब तैयार कर सकते हैं - एक ऐसी किताब जो बाकियों से बेहतर स्कूलों की मूलभूत जानकारियां, वहां उपलब्ध संसाधनों, और अच्छी केस स्टडीज को सामने ला सके। इसके फलस्वरूप, यह पुस्तिका तैयार की गई।

निश्चित ही यह आखिरी बात नहीं है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि हम यानी जीएसपी टीम व हमारे स्कूलों, शिक्षकों, और छात्रों का विस्तृत परिवार जैसे-जैसे इस सफर पर साथ-साथ आगे बढ़ेंगे, हम एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखेंगे और उस सीख को लगातार साझा करते रहेंगे।

टीम जीएसपी